©cc-by-nc-sa 2004-2024 Н.П.Лихушина
http://galenel.info/sanskrit/07-buddhist-sutra/saddharma-pundarika-sutra-4-unit.pdf

Притча о блудном сыне

Сутра Лотоса Благого Учения, глава 4

सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रम्

अधिमुक्तिपरिवर्तः।

adhimukti *buddh. f.* - наклонность, предпочтение; привязанность;

अथ खल्वायुष्मान् सुभूतिरायुष्मांश्च महाकात्यायनः आयुष्मांश्च महाकाश्यपः आयुष्मांश्च महामौद्गल्यायनः इममेवंरूपमश्रुतपूर्वं धर्मं श्रुत्वा

subhūti, mahākātyāyana, mahākāśyapa. mahāmaudgalyāyana - *nom. pr.* ученики Будды;

भगवतोऽन्तिकात्संमुखमायुष्मतश्च शारिपुत्रस्य व्याकरणं श्रुत्वा अनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ आश्चर्यप्राप्ता अद्भुतप्राप्ता औद्विल्यप्राप्तास्तस्यां वेलायामुत्थायासनेभ्यो येन भगवांस्तेनोपसंक्रामन्।

antikād *adv.* - от;

vyākaraṇa *n* - различие, анализ, грамматика; *buddh.* объяснение, разъяснение; предсказание;

audbilya *buddh.n* - радость, радостное волнение;

upa-saṃ√kram (upasaṃkrāmati P./upasaṃkramate Ā.) - ступать, подходить, переходить; *buddh.* - подходить, приближаться; наступать,

उपसंक्रम्य एकांसमुत्तरासङ्गं कृत्वा दक्षिणं जानुं पृथिव्यां प्रतिष्ठाप्य येन भगवांस्तेनाञ्जलिं प्रणम्य भगवन्तमभिमुखमुल्लोकयमाना अवनतकाया अभिनतकायाः प्रणतकायास्तस्यां वेलायां भगवन्तमेतदवोचन्

aṃsa *m* - плечо;

uttarāsaṅga *m* - верхняя одежда;

jānu *m, n,* jānu-maṇḍala *n* - колено;

ul√lok I P. - смотреть с почтением или уважением на к.-л.;

ava√nam, abhi√nam, pra√ṇam I P. - поклоняться, склоняться, кланяться;

वयं हि भगवन्जीर्णा वृद्धा महल्लका अस्मिन्भिक्षुसंघे स्थविरसंमता जराजीर्णीभूता निर्वाणप्राप्ताः स्म

mahallaka *buddh.* - старый, старший;

sthavira - старый, важный, знатный, почтенный, уважаемый;

इति भगवन् निरुद्यमा अनुत्तरायां सम्यक्संबोधावप्रतिबलाः स्मः, अप्रतिवीर्यारम्भाः स्मः।

udyama *m* - усилие, напряжение; старание, усердие;

pratibala - равный по силе к.-л., подобный к.-л., способный на ч.-л.;

aprativīryārambha (aprativīrya-ārambha) *buddh.* - не имеющий достаточно энергии для к.-л. дела;

यदापि भगवान्धर्मं देशयति, चिरं निषण्णश्च भगवान्भवति

√deśaya *buddh.* - учить, сообщать; показывать;

वयं च तस्यां धर्मदेशनायां प्रत्युपस्थिता भवामः

deśanā *f buddh.* - наставление, поучение, проповедь; исповедь;

pratyupasthita (p.p. *om* praty-upa-√sthā) *buddh.* - прислуживающий; присутствовавший, сопутствующий; вовлеченный;

तदाप्यस्माकं भगवन् चिरं निषण्णानां भगवन्तं चिरं पर्युपासितानामङ्गप्रत्यङ्गानि दुःखन्ति संधिविसंधयश्च दुःखन्ति।

pratyaṅga *n* - небольшая часть тела, раздел;

saṃdhi *m* - соединение, слияние; сустав, сочленение;

visaṃdhi *m buddh.* - малое сочленение (тела);

√duḥkh *den.* P. *buddh.* - болеть, мучиться;

ततो वयं भगवन् भगवतो धर्मं देशयमानस्य शून्यतानिमित्ताप्रणिहितं सर्वमाविष्कुर्मः।

śūnyatā *f* - пустота;

animitta - беспричинный; *n* беспричинность;

apraṇihita - непривязанный, не имеющий цели; (*n*) непривязанность, свобода от желаний и стремлений;

āvis√kar VIII U. - открывать, обнаруживать;

नास्माभिरेषु बुद्धधर्मेषु बुद्धक्षेत्रव्यूहेषु वा बोधिसत्त्वविक्रीडितेषु वा तथागतविक्रीडितेषु वा स्पृहोत्पादिता।

dharma *m* – положение, состояние, правило, закон, законность, долг, обязанность, религия, нравственное достоинство, благочестие, праведность, добродетель; *buddh.* элементарная единица психики субъекта, носитель одного качества; характерная черта, свойство, качество; идея;

(buddha)-kṣetra *m* - поле Будды; вселенная или система миров, где обитает Будда;

vyūha *m* - *buddh.* проявление (*особенно* сверхъестественное), великолепие; приведение в порядок, украшение;

vikrīḍita *n* - состязание; чудо, проявление сверхъестественных способностей;

तत्कस्य हेतोः। यच्चास्माद्भगवंस्त्रैधातुकान्निर्धाविता निर्वाणसंज्ञिनः वयं च जराजीर्णाः।

traidhātuka *n* - три мира;

nir√dhāv I P. - бежать, исчезать;

saṃjñin *buddh.* - осознающий; имеющий представление о ч.-л.; имеющий неправильное представление, иллюзию насчет ч.-л.;

ततो भगवन् अस्माभिरप्यन्ये बोधिसत्त्वा अववदिता अभूवन्ननुत्तरायां सम्यक्संबोधौ अनुशिष्टाश्च।

ava√vad I P. - советовать, наставлять в ч.-л.;

anu√śās (II P., p.p. anuśiṣṭa) - поучать, наставлять, указывать;

न च भगवंस्तत्रास्माभिरेकमपि स्पृहाचित्तमुत्पादितमभूत्।

ते वयं भगवन्नेतर्हि भगवतोऽन्तिकाच्छ्रावकाणामपि व्याकरणमनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ भवतीति श्रुत्वा आश्चर्याद्भुतप्राप्ता महालाभप्राप्ताः स्मः।

भगवन्नद्य सहसैवेममेवंरूपमश्रुतपूर्वं तथागतघोषं श्रुत्वा महारत्नप्रतिलब्धाश्च स्मः।

ghoṣa *m* - шум, крик, звук (речи); слух, молва; *buddh.* воззвание, провозглашение; объявление;

भगवन् अप्रमेयरत्नप्रतिलब्धाश्च स्मः।

भगवन् अमार्गितमपर्येष्टमचिन्तितमप्रार्थितं चास्माभिर्भगवन्निदमेवंरूपं महारत्नं प्रतिलब्धम्।

√mārg X P. - искать;

parīṣ (pari√iṣ, paryeṣati I U.) - искать; caus. (paryeṣayati) искать;

prārth (pra√arth) X Ā. - добиваться, желать, жаждать; требовать, просить о чем-либо (+*Acc.*);

प्रतिभाति नो भगवन्, प्रतिभाति नः सुगत।

prati√bhā II P. - сиять, являться, проявляться; становиться ясным, делаться очевидным;

तद्यथापि नाम भगवन् कश्चिदेव पुरुषः पितुरन्तिकादपक्रामेत्।

सोऽपक्रम्य अन्यतरं जनपदप्रदेशं गच्छेत्।

janapada *m* - земля, страна, государство; население, народ;

स तत्र बहूनि वर्षाणि विप्रवसेद् विंशतिं वा त्रिंशद्वा चत्वारिंशद्वा पञ्चाशद्वा।

vi-pra√vas I U. - начинать путешествие, уехать за границу, жить за границей; *buddh.* быть разделенным;

अथ स भगवन् महान् पुरुषो भवेत्। स च दरिद्रः स्यात्।

स च वृत्तिं पर्येषमाण आहारचीवरहेतोर्दिशो विदिशः प्रक्रामन् अन्यतरं जनपदप्रदेशं गच्छेत्।

vṛtti *f* - деятельность, работа, средства к существованию; образ действия, поведение;

cīvara *n* - монашеское одеяние;

pra√kram (I U. prakrāmati/prakramate) - идти, следовать, выступать;

तस्य च स पिता अन्यतमं जनपदं प्रक्रान्तः स्यात्।

बहुधनधान्यहिरण्यकोशकोष्ठागारश्च भवेत्।

kośa *n* - сундук, шкаф; словарь; кладовая, сокровищница;

koṣṭhāgāra (koṣṭha-agāra) *n* - склад, кладовая;

बहुसुवर्णरूप्यमणिमुक्तावैडूर्यशङ्खशिलाप्रवालजातरूपरजतसमन्वागतश्च भवेत्।

suvarṇa - золотой; *n* золото, деньги, богатство;
rūpya *n* - серебро, золотая или серебряная монета;
vaiḍūrya *m, n* - ляпис-лазурь, кошачий глаз;
śaṅkhaśilā (śaṅkha-śilā) *f* - вид драгоценного камня;
pravāla *m, n* - коралл;
jatārūpa - прекрасный, сверкающий, золотой; *n* золото;
rajata *n* - серебро;
samanvāgata *buddh.* - сопровождаемый, наделенный, снабженный, украшенный ч.-л.;

बहुदासीदासकर्मकरपौरुषेयश्च भवेत्।

बहुहस्त्यश्वरथगवेडकसमन्वागतश्च भवेत्।

eḍaka *m* - овца;

महापरिवारश्च भवेत्। महाजनपदेषु च धनिकः स्यात्।

आयोगप्रयोगकृषिवणिज्यप्रभूतश्च भवेत्॥

āyoga *m buddh.* - деятельность; накопление;
prayoga *m* - вложение денег, кредитование;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुष आहारचीवरपर्येष्टिहेतोर्ग्रामनगरनिगमजनपदराष्ट्रराजधानीषु पर्यटमानोऽनुपूर्वेण यत्रासौ पुरुषो बहुधनहिरण्यसुवर्णकोशकोष्ठागारस्तस्यैव पिता वसति तन्नगरमनुप्राप्तो भवेत्।

paryeṣṭi *f buddh.* - стремление, поиск ч.-л.;
pary√aṭ I U. - бродить, путешествовать, скитаться, странствовать;
anupūrveṇa *adv.* - один за другим, по очереди;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुषस्य पिता बहुधनहिरण्यकोशकोष्ठागारस्तस्मिन्नगरे वसमानस्तं पञ्चाशद्वर्षनष्टं पुत्रं सततसमितमनुस्मरेत्।

samitam *adv.* - постоянно, непрерывно, всё время, всегда;

समनुस्मरमाणश्च न कस्यचिदाचक्षेदन्यत्रैक एवात्मनाध्यात्मं संतप्येदेवं च चिन्तयेत्

ā√cakṣ II Ā. - рассказывать, называть;
adhyātma - собственный, свой;

अहमस्मि जीर्णो वृद्धो महल्लकः।

प्रभूतं मे हिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारं संविद्यते न च मे पुत्रः कश्चिदस्ति।

मा हैव मम कालक्रिया भवेत्सर्वमिदमपरिभुक्तं विनश्येत्।

kālakriyā (kāla-kriyā) *f buddh.* - смерть;
pari√bhuj (VII U., p.p. paribhukta) - есть, наслаждаться, тратить;

स तं पुनः पुनः पुत्रमनुस्मरेत्

अहो नामाहं निर्वृतिप्राप्तो भवेयं यदि मे स पुत्र इमं धनस्कन्धं परिभुञ्जीत॥

nirvṛti *f* - счастье, удовлетворенность; удовольствие;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुष आहारचीवरं पर्येषमाणोऽनुपूर्वेण येन तस्य

प्रभूतहिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारस्य समृद्धस्य पुरुषस्य निवेशनं तेनोपसंक्रामेत्।

samṛddha (p.p. *om* sam√ṛdh) - успешный, процветающий, богатый;

अथ खलु भगवन् स तस्य दरिद्रपुरुषस्य पिता स्वके निवेशनद्वारे महत्या ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्रपरिषदा परिवृतः पुरस्कृतो महासिंहासने सपादपीठे सुवर्णरूप्यप्रतिमण्डिते उपविष्टो हिरण्यकोटीशतसहस्रैर्व्यवहारं कुर्वन्

वालव्यजनेन वीज्यमानो विततविताने पृथिवीप्रदेशे मुक्तकुसुमाभिकीर्णे रत्नदामाभिप्रलम्बिते महत्यद्ध्र्योपविष्टः स्यात्।

pariṣad (*buddh.* parṣad) *f* - собрание, публика (в драме);
viś *f* место жительства; племя, народ, третья варна – вайшьи;
puras√kar VIII U. - дать преимущество, оказывать честь;
pādapīṭha (pāda-pīṭha) *m* - скамеечка для ног, подставка для ног;
parimaṇḍita - украшенный по кругу ч.-л.;
hiraṇya *n* - золото, золотая монета, деньги;
vyavahāra *m* - поступок, действие, торговля; выражение, обсуждение ч.-л.;
vālavyajana, valavyañjana *n* - опахало из ячьего хвоста;
√vīj I U. - обмахивать, обдувать;
vitāna *m, n* - балдахин, полог, навес, тент;
dāma *n* - лента, тесьма, шнур; гирлянда;
ṛddhi *f* - счастье, успех, удача, благополучие; *buddh.* сверхъестественная магическая сила;

अद्राक्षीत् स भगवन् दरिद्रपुरुषस्तं स्वकं पितरं स्वके निवेशनद्वारे एवंरूपयद्ध्र्योपविष्टं महता जनकायेन परिवृतं गृहपतिकृत्यं कुर्वाणम्।

kāya *m* - тело; *buddh.* собрание, большое количество, толпа;
kṛti *f* - дело;

दृष्ट्वा च पुनर्भीतस्त्रस्तः संविग्नः संहृष्टरोमकूपजात उद्विग्नमानस एवमनुविचिन्तयामास

√tras (I P. trasati) дрожать, бояться, трястись;
saṃ√vij (VI Ā., p.p. saṃvigna) - пугаться;
saṃ√harṣ I P. - радоваться; содрогаться;
romakūpa (roma-kūpa) *m, n* - пора (на теле);
ud√vij (VI Ā., p.p. udvigna) - бояться, дрожать, испытывать ужас;

सहसैवायं मया राजा वा राजमात्रो वा आसादितः।

rājamātra (rāja-mātra) *m* - обладающий царской властью; *buddh.* наместник, правитель, министр;

नास्त्यस्माकमिह किंचित् कर्म।

गच्छामो वयं येन दरिद्रवीथी तत्रास्माकमाहारचीवरमल्पकृच्छ्रेणैव उत्पत्स्यते।

vīthī *f* - улица;
kṛcchra - трудный, тяжкий, опасный; *m, n* затруднение, опасность, зло, горе; *In. Abl. adv.* с трудом;

अलं मे चिरं विलम्बितेन। मा हैवाहमिह वैष्टिको वा गृह्येयान्यतरं वा दोषमनुप्राप्नुयाम्॥

vi√lamb I Ā. - опаздывать, медлить;
vaiṣṭika *m buddh.* - работающий на принудительных работах, подневольный работник;
doṣa *m, n* - недостаток, изъян; ошибка, промах, вина, грех; вред, болезнь;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुषो दुःखपरंपरामनसिकारभयभीतस्त्वरमाणः प्रक्रामेत् पलायेत् न तत्र संतिष्ठेत्।

manasikāra (manasi-kāra) *m buddh.* - мысль, размышление, сосредоточение, внимание;

अथ खलु भगवन् स आढ्यः पुरुषः स्वके निवेशनद्वारे सिंहासन उपविष्टस्तं स्वकं पुत्रं सहदर्शनेनैव प्रत्यभिजानीयात्।

praty-abhi√jñā IX U. - узнавать, помнить, знать, понимать;

दृष्ट्वा च पुनस्तुष्ट उदग्र आत्तमनस्कः प्रमुदितः प्रीतिसौमनस्यजातो भवेत् एवं च चिन्तयेत्

āttamanas(ka), āptamanas *buddh.* - радостный, обрадованный, довольный; восхищенный;
saumanasya - радующий; *n* радость, жизнерадостность; удовлетворенность;

आश्चर्यं यावद् यत्र हि नाम अस्य महतो हिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारस्य परिभोक्ता उपलब्धः।

paribhoktar - поедающий, наслаждающийся, использующий;

अहं चैतमेव पुनः पुनः समनुस्मरामि। अयं च स्वयमेवेहागतः। अहं च जीर्णो वृद्धो महल्लकः॥

sam-anu√smar I P. - *buddh.* помнить, вспоминать;

अथ खलु भगवन्स पुरुषः पुत्रतृष्णासंपीडितस्तस्मिन् क्षणलवमुहूर्ते जवनान् पुरुषान् संप्रेषयेत् गच्छत मार्षा एतं पुरुषं शीघ्रमानयध्वम्।

javana - быстрый, скорый, стремительный;
mārṣa - *buddh.* (обычно Voc.) почтенный, уважаемый; друг;

अथ खलु भगवंस्ते पुरुषाः सर्व एव जवेन प्रधावितास्तं दरिद्रपुरुषमध्यालम्बेयुः।

adhy-ā√lamb I U.- хватать;

अथ खलु दरिद्रपुरुषस्तस्यां वेलायां भीतस्त्रस्तः संविग्नः संहृष्टरोमकूपजातः उद्विग्नमानसो दारुणमार्तस्वरं मुञ्चेदारवेद्विरवेत्।

velā *f* - время, срок; час, минута;
dāruṇa - страшный, твердый, суровый, строгий, резкий, сильный;
ārta (*p.p. om* ā√ar) - несчастный, страдающий, угнетенный, измученный, опечаленный, скорбный;

नाहं युष्माकं किंचिदपराध्यामीति वाचं भाषेत।

अथ खलु ते पुरुषा बलात्कारेण तं दरिद्रपुरुषं विरवन्तमप्याकर्षेयुः।

balātkāreṇa (balāt-kāreṇa) *adv.* - сильно; насильственно, принудительно, против воли;

अथ खलु स दरिद्रपुरुषो भीतस्त्रस्तः संविग्न उद्विग्नमानस एवं च चिन्तयेत्

मा तावदहं वध्यो दण्डयो भवेयम्। नश्यामीति।

स मूर्छितो धरण्यां प्रपतेत् विसंज्ञश्च स्यात्। आसन्ने चास्य स पिता भवेत्।

mūrchita (p.p. *om* √mūrch) - ослабевший, оцепеневший, остолбеневший, потерявший сознание;
visaṃjña - без чувств, без сознания, безжизненный;

स तान् पुरुषानेवं वदेत् मा भवन्त एतं पुरुषमानयन्त्विति।

तमेनं शीतलेन वारिणा परिसिञ्चित्वा न भूय आलपेत्। तत्कस्य हेतोः।

जानाति स गृहपतिस्तस्य दरिद्रपुरुषस्य हीनाधिमुक्तिकतामात्मनश्चोदारस्थामताम्। जानीते च ममैष पुत्र इति॥

adhimuktikatā *f buddh.* - страстная заинтересованность, рьяная увлеченность ч.-л.;
sthāman *n* - место, положение; сила;

अथ खलु भगवन् स गृहपतिरुपायकौशल्येन न कस्यचिदाचक्षेन्ममैष पुत्र इति।

upāyakauśalya (upāya-kauśalya) *n buddh.*- искусство уловок;

अथ खलु भगवन् स गृहपतिरन्यतरं पुरुषमामन्त्रयेत्-गच्छ त्वं भोः पुरुष।

ā√mantraya Ā. - обращаться, окликать, звать;

एनं दरिद्रपुरुषमेवं वदस्व गच्छ त्वं भोः पुरुष येनाकाङ्क्षसि। मुक्तोऽसि।

एवं वदति स पुरुषस्तस्मै प्रतिश्रुत्य येन स दरिद्रपुरुषस्तेनोपसंक्रामेत्।

उपसंक्रम्य तं दरिद्रपुरुषमेवं वदेत् गच्छ त्वं भोः पुरुष येनाकाङ्क्षसि। मुक्तोऽसीति।

अथ खलु स दरिद्रपुरुष इदं वचनं श्रुत्वा आश्चर्याद्भुतप्राप्तो भवेत्।

स उत्थाय तस्मात्पृथिवीप्रदेशाद्येन दरिद्रवीथी तेनोपसंक्रामेदाहारचीवरपर्येष्टिहेतोः।

अथ खलु स गृहपतिस्तस्य दरिद्रपुरुषस्याकर्षणहेतोरुपायकौशल्यं प्रयोजयेत्।

ākarṣaṇa *n* - влечение, привлечение;
pra√yojaya (caus. *om* pra√yuj) - бросать, метать; направлять, посылать; сосредотачивать ум; предпринимать, совершать, устраивать; представлять (на сцене);

स तत्र द्वौ पुरुषौ प्रयोजयेद्दुर्वर्णावल्पौजस्कौ

ojaska *n buddh.* - сила;

-गच्छतां भवन्तौ योऽसौ पुरुष इहागतोऽभूत्

तं युवां द्विगुणया दिवसमुद्रया आत्मवचनेनैव भरयित्वेह मम निवेशने कर्म कारापयेथाम्।

dviguṇa - двойной;
mudrā *f buddh.*- счет; монета; заработная плата;

सचेत् स एवं वदेत् किं कर्म कर्तव्यमिति, स युवाभ्यामेवं वक्तव्यः

संकारधानं शोधयितव्यं सहावाभ्यामिति।

saṃkāra *m buddh.* - грязь, мусор; навоз, экскременты;
-dhāna *n buddh.* - хранилище, вместилище, место;

अथ तौ पुरुषौ तं दरिद्रपुरुषं पर्येषयित्वा तया क्रियया संपादयेताम्।

saṃ√pādaya (*caus. om* saṃ√pad) - осуществлять, делать; предоставлять, обеспечивать (+In.);

अथ खलु तौ द्वौ पुरुषौ स च दरिद्रपुरुषो वेतनं गृहीत्वा तस्य महाधनस्य पुरुषस्यान्तिकात्तस्मिन्नेव निवेशने संकारधानं शोधयेयुः।

vetana *n* - жалование, заработная плата;

तस्यैव च महाधनस्य पुरुषस्य गृहपरिसरे कटपलिकुञ्चिकायां वासं कल्पयेयुः।

parisara *m* - близость; окружение;
kaṭapalikuñcikā (kaṭa-palikuñcikā) *f buddh.* - соломенная хижина;

स चाढ्यः पुरुषो गवाक्षवातायनेन तं स्वकं पुत्रं पश्येत् संकारधानं शोधयमानम्।

gavākṣa (gava-akṣa) *m* - круглое окно, отдушина, вентиляционное отверстие;
vātāyana *n* - окно;

दृष्ट्वा च पुनराश्चर्यप्राप्तो भवेत्॥

अथ खलु स गृहपतिः स्वकान्निवेशनादवतीर्यापनयित्वा माल्याभरणान्यपनयित्वा मृदुकानि वस्त्राणि चौक्षाण्युदाराणि मलिनानि वस्त्राणि प्रावृत्य दक्षिणेन पाणिना पिटकं परिगृह्य पांसुना स्वगात्रं दूषयित्वा दूरत एव संभाषमाणो येन स दरिद्रपुरुषस्तेनोपसंक्रामेत्।

caukṣa - чистый;
prā√var (pra-ā√var) V U.- покрывать, надевать ч.-л.;
piṭaka *n* - корзина, ящик;
pāṃsu *m* - земля, пыль, песок;
dūratas *adv.* - далеко, издалека;

उपसंक्रम्यैवं वदेत्-वहन्तु भवन्तः पिटकानि, मा तिष्ठत, हरत पांसूनि।

अनेनोपायेन तं पुत्रमालपेत् संलपेच्च। एनं वदेत् इहैव त्वं भोः पुरुष कर्म कुरुष्व।

मा भूयोऽन्यत्र गमिष्यसि। सविशेषं तेऽहं वेतनकं दास्यामि।

येन येन च ते कार्य भवेत् तद्विश्रब्धं मां याचेः यदि वा कुण्डमूल्येन यदि वा कुण्डिकामूल्येन यदि वा स्थालिकामूल्येन यदि वा काष्ठमूल्येन यदि वा लवणमूल्येन यदि वा भोजनेन यदि वा प्रावरणेन।

kārya (*p.n. om* √kar VIII U.) *n* - дело, работа; намерение; обязанность; нужда (+In.);
viśrabdha (p.p.*om* vi√śrambh) - доверчивый, уверенный, бесстрашный, спокойный; viśrabdham *adv.* - доверчиво, спокойно, без страха;
kuṇḍa *n* - чаша, котелок, сосуд для воды;
mūlya - основной; *n* цена, ценность, достояние;
kuṇḍikā *f* - котелок, сосуд для воды;
sthālikā *f buddh.* - небольшой сосуд;
prāvaraṇa *n* - плащ, верхняя одежда;

अस्ति मे भोः पुरुष जीर्णशाटी। सचेत्तया ते कार्यं स्यात् याचेः। अहं तेऽनुप्रदास्यामि।

śāṭī *f* - платье, одежда;

anu-pra√dā (III P. anupradadāti) *buddh.* - дать, подарить;

येन येन ते भोः पुरुष कार्यमेवंरूपेण परिष्कारेण, तं तमेवाहं ते सर्वमनुप्रदास्यामि।

pariṣkāra *m buddh.* - имущество, личные вещи, посуда, утварь;

निर्वृतस्त्वं भोः पुरुष भव। यादृशस्ते पिता, तादृशस्तेऽहं मन्तव्यः।

nirvṛta (p.p. *om* nir√var) - счастливый; *buddh*. освобожденный, вошедший в нирвану;

तत्कस्य हेतोः। अहं च वृद्धः, त्वं च दहरः।

dahara *buddh*. - молодой;

मम च त्वया बहु कर्म कृतमिमं संकारधानं शोधयता।

न च त्वया भोः पुरुष अत्र कर्म कुर्वता शाठ्यं वा वक्रता वा कौटिल्यं वा मानो वा म्रक्षो वा कृतपूर्वः करोषि वा।

śāṭhya *n* - обман, хитрость, коварство; ложь, вероломство; бесчестность, безнравственность:
vakratā *f* - изогнутость; испорченность, лживость, двуличность;
kauṭilya *m* - изгиб, кривизна, фальшь, бесчестность;
māna *m* - мнение, самомнение, гордость;
mrakṣa *m* - утаивание греха, лживость, лицемерие;

सर्वथा ते भोः पुरुष न समनुपश्याम्येकमपि पापकर्म, यथैषामन्येषां पुरुषाणां कर्म कुर्वतामिमे दोषाः संविद्यन्ते।

यादृशो मे पुत्र औरसः तादृशस्त्वं मम अद्याग्रेण भवसि॥

अथ खलु भगवन् स गृहपतिस्तस्य दरिद्रपुरुषस्य पुत्र इति नाम कुर्यात्।

स च दरिद्रपुरुषस्तस्य गृहपतेरन्तिके पितृसंज्ञामुत्पादयेत्।

saṃjñā *f* - сознание, осознание; восприятие; память, чувства; представление, мысленный образ;

अनेन भगवन् पर्यायेण स गृहपतिः पुत्रकामतृषितो विंशतिवर्षाणि तं पुत्रं संकारधानं शोधापयेत्।

paryāya *buddh. m* - предрасположенность, склонность, намерение; путь, способ, средство; образ действия; вид, сорт; систематизация, классификация;

अथ विंशतेर्वर्षाणामत्ययेन स दरिद्रपुरुषस्तस्य गृहपतेर्निवेशने विश्रब्धो भवेन्निष्क्रमणप्रवेशे, तत्रैव च कटपलिकुञ्चिकायां वासं कल्पयेत्॥

अथ खलु भगवंस्तस्य गृहपतेर्ग्लान्यं प्रत्युपस्थितं भवेत्।

glānya *n* - слабость, бессилие, немощь;
praty-upa√sthā *buddh.*- прибегать к ч-л., опираться на ч-л., утверждаться в ч.-л.;

स मरणकालसमयं च आत्मनः प्रत्युपस्थितं समनुपश्येत्।

स तं दरिद्रपुरुषमेवं वदेत् आगच्छ त्वं भोः पुरुष। इदं मम प्रभूतं हिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारमस्ति।

अहं बाढग्लानः। इच्छाम्येतं यस्य दातव्यं यतश्च ग्रहीतव्यं यच्च निधातव्यं भवेत् सर्वं संजानीयाः।

bāḍha - крепкий, сильный; крепко, сильно, очень;
saṃ√jñāX U. *buddh.*- знать (хорошо), осознавать, обдумывать;

तत्कस्य हेतोः। यादृश एव अहमस्य द्रव्यस्य स्वामी, तादृशस्त्वमपि।

मा च मे त्वं किंचिदतो विप्रणाशयिष्यसि॥

vi-pra√ṇāśaya *caus. buddh.* - допустить потерю, стать причиной утраты ч.-л.;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुषोऽनेन पर्यायेण तच्च तस्य गृहपतेः प्रभूतं हिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारं संजानीयात्।

आत्मना च ततो निःस्पृहो भवेत्। न च तस्मात् किंचित् प्रार्थयेत् अन्तशः सक्तुप्रस्थमूल्यमात्रमपि।

antaśas *adv. buddh.* - по меньшей мере, в крайнем случае, столь много как;
prastha *m* - мера веса (по разным версиям в 6, 16 или 32 палы; pala *n* – мера веса в 93, 312 гр.);

तत्रैव च कटपलिकुञ्चिकायां वासं कल्पयेत् तामेव दरिद्रचिन्तामनुविचिन्तयमानः॥

anu-vi√cint X P. *buddh.*- думать, считать, полагать;

अथ खलु भगवन् स गृहपतिस्तं पुत्रं शक्तं परिपालकं परिपक्वं विदित्वा

paripālaka - защищающий, поддерживающий, заботящийся (о собственности);
paripakva *buddh.*- полностью развит;

अवमर्दितचित्तमुदारसंज्ञया च पौर्विकया दरिद्रचिन्तया आर्तीयन्तं जेह्लीयमाणं जुगुप्समानं विदित्वा

ava√mard IX P. - разрушать, ломать, давить;
udāra *buddh.* - низкий, грубый (udāra-saṅjñā - низкий образ мыслей, грубый ум); *однако skr.* udāra *m* возвышенный, благородный; прекрасный;
ārtīyant (p.pr.act. *om* √ārtīyate *buddh.)* - страдающий, претерпевающий;

मरणकालसमये प्रत्युपस्थिते तं दरिद्रपुरुषमानाय्य महतो ज्ञातिसंघस्योपनामयित्वा राज्ञो वा राजमात्रस्य वा पुरतो नैगमजानपदानां च संमुखमेवं संश्रावयेत्

upa√nāmaya *caus. buddh.* - давать, приносить; представлять, вводить куда-либо;

शृण्वन्तु भवन्तः अयं मम पुत्र औरसो मयैव जनितः।

अमुकं नाम नगरम्। तस्मादेष पञ्चाशद्वर्षो नष्टः।

amuka - такой-то, имярек;

अमुको नामैष नाम्ना। अहमप्यमुको नाम।

ततश्चाहं नगरादेतमेव मार्गमाण इहागतः।

एष मम पुत्रः अहमस्य पिता। यः कश्चिन्ममोपभोगोऽस्ति तं सर्वमस्मै पुरुषाय निर्यातयामि।

upabhoga *m* - наслаждение, использование, еда; доход, выручка;
nir√yātaya *caus. buddh.* - давать, дарить; возвращать;

यच्च मे किंचिदस्ति प्रत्यात्मकं धनम् तत्सर्वमेष एव जानाति॥

pratyātmaka *buddh.* - собственный, принадлежащий кому-либо;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुषस्तस्मिन् समये इममेवंरूपं घोषं श्रुत्वा आश्चर्याद्भुतप्राप्तो भवेत्।

एवं च विचिन्तयेत् सहसैव मयेदमेव तावद् हिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारं प्रतिलब्धमिति॥

एवमेव भगवन्वयं तथागतस्य पुत्रप्रतिरूपकाः।

pratirūpaka *n* - образ, изображение, картина;

तथागतश्च अस्माकमेवं वदति-पुत्रा मम यूयमिति, यथा स गृहपतिः।

वयं च भगवंस्तिसृभिर्दुःखताभिः संपीडिता अभूम।

duḥkhatā *f buddh.* - (состояние) несчастья;

कतमाभिस्तिसृभिः। यदुत दुःखदुःखतया संस्कारदुःखतया विपरिणामदुःखतया च।

vipariṇāma *n* - изменение; *buddh.* превратность, чередование, изменение к худшему;

संसारे च हीनाधिमुक्तिकाः। ततो वयं भगवता बहून् धर्मान् प्रत्यवरान् संकारधानसदृशाननुविचिन्तयिताः।

adhimuktika *buddh.* - имеющий большой интерес, увлеченный;
pratyavara - менее значительный, менее ценный, чем (+Abl.);

तेषु चास्म प्रयुक्ता घटमाना व्यायच्छमानाः।

√ghaṭ I Ā. - стараться; делать, производить; происходить, иметь место;
vy-ā√yam (I P. vyāyacchati) - вытягиваться, простираться; стараться, стремиться; бороться;

निर्वाणमात्रं च वयं भगवन् दिवसमुद्रामिव पर्येषमाणा मार्गामः।

√mārg I, X P. - искать;

तेन च वयं भगवन् निर्वाणेन प्रतिलब्धेन तुष्टा भवामः।

बहु च लब्धमिति मन्यामहे तथागतस्यान्तिकात् एषु धर्मेष्वभियुक्ता घटित्वा व्यायमित्वा।

abhi√yuj *buddh.pass.* - заниматься ч.-л., направлять (*внимание, усилия на ч.-л.*);

प्रजानाति च तथागतोऽस्माकं हीनाधिमुक्तिकताम् ततश्च भगवानस्मानुपेक्षते न संभिनत्ति नाचष्टे

upekṣ (upa√īkṣ) I Ā - пренебрегать, ожидать;

saṃ√bhid VII P. *buddh.* - соединять; рассматривать ч.-л., заниматься решением (проблемы);

योऽयं तथागतस्य ज्ञानकोशः एष एव युष्माकं भविष्यतीति।

भगवांश्चास्माकमुपायकौशल्येन अस्मिंस्तथागतज्ञानकोशे दायादान् संस्थापयति।

dāyāda *m* - наследник, преемник (*om* dāya *m* - часть, доля; наследство);

निःस्पृहाश्च वयं भगवन्।

तत एवं जानीम एतदेवास्माकं बहुकरं यद्वयं तथागतस्यान्तिकाद्दिवसमुद्रामिव निर्वाणं प्रतिलभामहे।

bahukara *buddh.* - очень полезный, очень поддерживающий;

ते वयं भगवन् बोधिसत्त्वानां महासत्त्वानां तथागतज्ञानदर्शनमारभ्योदारां धर्मदेशनां कुर्मः।

तथागतज्ञानं विवरामो दर्शयाम उपदर्शयामः।

vi√var I, V, IX U. - открывать, показывать;

वयं भगवंस्ततो निःस्पृहाः समानाः।

तत्कस्य हेतोः। उपायकौशल्येन तथागतोऽस्माकमधिमुक्तिं प्रजानाति।

तच्च वयं न जानीमो न बुध्यामहे यदिदं भगवता एतर्हि कथितम् यथा वयं भगवतो भूताः पुत्राः

भगवांश्चास्माकं स्मारयति तथागतज्ञानदायादान्।

तत्कस्य हेतोः। यथापि नाम वयं तथागतस्य भूताः पुत्राः इति, अपि तु खलु पुनर्हीनाधिमुक्ताः।

सचेद्भगवानस्माकं पश्येदधिमुक्तिबलम्, बोधिसत्त्वशब्दं भगवानस्माकमुदाहरेत्।

वयं पुनर्भगवता द्वे कार्ये कारापिताः बोधिसत्त्वानां चाग्रतो हीनाधिमुक्तिका

इत्युक्ताः, ते चोदारायां बुद्धबोधौ समादापिताः

sam-ā√dāpaya *buddh.* - понуждать взять ч.-л., побуждать (к просветлению),

अस्माकं चेदानीं भगवानधिमुक्तिबलं ज्ञात्वा इदमुदाहृतवान्।

अनेन वयं भगवन् पर्यायेणैवं वदामः

सहसैवास्माभिर्निःस्पृहैराकाङ्क्षितममार्गितमपर्येषितमचिन्तितमप्रार्थितं सर्वज्ञतारत्नं प्रतिलब्धं यथापीदं तथागतस्य पुत्रैः॥

अथ खल्वायुष्मान् महाकाश्यपस्तस्यां वेलायामिमा गाथा अभाषत्

आश्चर्यभूताः स्म तथाद्भुताश्च औद्विल्यप्राप्ताः स्म श्रुणित्व घोषम्।
सहसैव अस्माभिरयं तथाद्य मनोज्ञघोषः श्रुतु नायकस्य॥१॥

manojña - приятный, прекрасный;

विशिष्टरत्नान महन्तराशिर्मुहूर्तमात्रेणयमद्य लब्धः।
न चिन्तितो नापि कदाचि प्रार्थितस्तं श्रुत्व आश्चर्यगताः स्म सर्वे॥२॥

rāśi *m* - куча, скопление;

यथापि बालः पुरुषो भवेत उत्प्लावितो बालजनेन सन्तः।
पितुः सकाशातु अपक्रमेत अन्यं च देशं व्रजि सो सुदूरम्॥३॥

ut√plāvaya *caus. buddh.* - праздновать; прельщать, увлекать, соблазнять, совращать, отвлекать от ч.-л.; обманывать, вводить в заблуждение;

पिता च तं शोचति तस्मि काले पलायितं ज्ञात्व स्वकं हि पुत्रम्।

शोचन्तु सो दिग्विदिशासु हंचे वर्षाणि पञ्चाशदनूनकानि॥४॥

haṃce 3 sg. opt. *buddh.* см. skr. √añc I U. - идти, бродить; изгибаться;

तथा च सो पुत्र गवेषमाणो अन्यं महन्तं नगरं हि गत्वा।

निवेशनं मापिय तत्र तिष्ठेत्समर्पितो कामगुणेहि पञ्चभिः॥५॥

√māpaya (*caus. om* √mā) - измерять, строить;
samarpita *buddh.* - находящийся под влиянием, занятый; хорошо обеспеченный;
kāmaguṇa (kāma-guṇa) *buddh. m pl.* - качества желаний, объекты (пяти) чувств;

बहुं हिरण्यं च सुवर्णरूप्यं धान्यं धनं शङ्खशिलाप्रवालम्।

हस्ती च अश्वाश्च पदातयश्च गावः पशूश्चैव तथैडकाश्च॥६॥

padāti *m* - пешеход, пехотинец; наемный работник, слуга;

प्रयोग आयोग तथैव क्षेत्रा दासी च दासा बहु प्रेष्यवर्गः।

सुसत्कृतः प्राणिसहस्रकोटिभी राज्ञश्च सो वल्लभु नित्यकालम्॥७॥

preṣya *m* - посыльный; слуга, раб;

कृताञ्जली तस्य भवन्ति नागरा ग्रामेषु ये चापि वसन्ति ग्रामिणः।

बहुवाणिजास्तस्य व्रजन्ति अन्तिके बहूहि कार्येहि कृताधिकाराः॥८॥

एतादृशो ऋद्धिमतो नरः स्याज्जीर्णश्च वृद्धश्च महल्लकश्च।

स पुत्रशोकं अनुचिन्तयन्तः क्षपेय रात्रिंदिव नित्यकालम्॥९॥

ṛddhimant - богатый, процветающий, благополучный, успешный;
√kṣapaya (*caus. om* √kṣi) - разрушать, заканчивать; проводить (время);

स तादृशो दुर्मति मह्य पुत्रः पञ्चाश वर्षाणि तदा पलायकः।

अयं च कोशो विपुलो ममास्ति कालक्रिया चो मम प्रत्युपस्थिता॥१०॥

durmati - глупый, невежественный;
palāyaka *m* - беглец;
vipula - обширный, большой;

सो चापि बालो तद तस्य पुत्रो दरिद्रकः कृपणकु नित्यकालम्।

ग्रामेण ग्रामं अनुचंक्रमन्तः पर्येषते भक्त अथापि चोडम्॥११॥

daridraka *buddh.* - бедный;
bhakta *n* - еда;
coḍa *n, m buddh.* - одежда;

पर्येषमाणोऽपि कदाचि किंचिल्लभेत किंचित् पुन नैव किंचित्।

स शुष्यते परसरणेषु बालो दद्रूय कण्डूय विदिग्धगात्रः॥१२॥

saraṇa *buddh.* = *skt.* śaraṇa -дом, убежище;
dadrū *f* - кожная сыпь, вид проказы;
kaṇḍū *f* - зуд, чесотка;
vidigdha - измазанный, покрытый;

सो च व्रजेत्तं नगरं यहिं पिता अनुपूर्वशो तत्र गतो भवेत।

भक्तं च चोलं च गवेषमाणो निवेशनं यत्र पितुः स्वकस्य॥१३॥

yahim - Loc.sg. *om* yad; *adv.* yarhi;
anupūrvaśas *adv.* - обычно, сначала;

सो चापि आढ्यः पुरुषो महाधनो द्वारस्मि सिंहासनि संनिषण्णः।

परिवारितः प्राणिशतैरनेकैर्वितान तस्या विततोऽन्तरीक्षे॥१४॥

आप्तो जनश्चास्य समन्ततः स्थितो धनं हिरण्यं च गणेन्ति केचित्।

केचित्तु लेखानपि लेखयन्ति केचित् प्रयोगं च प्रयोजयन्ति॥१५॥

āpta (p.p. *om* √āp) - достигнутый, полученный, созданный, наполненный; доверенный, надежный, уважаемый;

lekha *m* - письмо, письменный документ;

pra√yojaya *caus.* - бросать, направлять, выпускать; произносить; показывать, представлять (на сцене); начинать, использовать; заниматься; сосредотачивать (ум);

सो चा दरिद्रो तहि एतु दृष्ट्वा विभूषितं गृहपतिनो निवेशनम्।

कहिं नु अद्य अहमत्र आगतो राजा अयं भेष्यति राजमात्रः॥१६॥

tahi, tahiṃ - Loc.sg. *om* tad; *adv.* там;

kahi, kahiṃ - Loc.sg. *om* ka, *либо вариант adv.* karhi;

मा दानि दोषं पि लभेयमत्र गृह्णित्व वेष्टिं पि च कारयेयम्।

अनुचिन्तयन्तः स पलायते नरो दरिद्रवीथीं परिपृच्छमानः॥१७॥

veṣṭi *f buddh.* - принудительные работы;

सो चा धनी तं स्वकु पुत्र दृष्ट्वा सिंहासनस्थश्च भवेत् प्रहृष्टः।

स दूतकान् प्रेषयि तस्य अन्तिके आनेथ एतं पुरुषं दरिद्रम्॥१८॥

समनन्तरं तेहि गृहीतु सो नरो गृहीतमात्रोऽथ च मूर्छ गच्छेत्।

ध्रुवं खु मह्यं वधका उपस्थिताः किं मह्य चोडेन थ भोजनेन वा॥१९॥

samantataram *adv.* - со всех сторон, вокруг; полностью, всячески;

mūrchā *f* - обморок, оцепенение;

khu *buddh. = skt.* khalu;

vadhaka *m* - убийца, палач;

दृष्ट्वा च सो पण्डितु तं महाधनी हीनाधिमुक्तो अयु बाल दुर्मतिः।

न श्रद्दधी मह्यमिमां विभूषितां पिता ममायं ति न चापि श्रद्दधीत्॥२०॥

vibhūṣitā *f buddh.* - роскошь, богатство, пышность, великолепие;

पुरुषांश्च सो तत्र प्रयोजयेत वङ्काश्च ये काणक कुण्ठकाश्च।

कुचेलकाः कृष्णक हीनसत्त्वाः पर्येषथा तं नरु कर्मकारकम्॥२१॥

vaṅka *buddh.* - согнутый, искривленный; неискренний, обманчивый; (skt. vakra)

kāṇaka *buddh.* - кривой, одноглазый (skt. kāṇa)

kuṇṭhaka, kuṇḍaka *buddh.*- обезображенный, изувеченный;

kucelaka *buddh.* - плохо одетый (skt. kucela);

संकारधानं इमु मह्य पूतिकमुच्चारप्रस्रावविनाशितं च।

तं शोधनार्थाय करोहि कर्म द्विगुणं च ते वेतनकं प्रदास्ये॥२२॥

uccāra *m* - экскременты, фекалии;

prasrāva *m* - моча;

pūtika - грязный, нечистый; зловонный, вонючий;

vināśita - очень разрушенный;

एतादृशं घोष श्रुणित्व सो नरो आगत्य संशोधयि तं प्रदेशम्।

तत्रैव सो आवसथं च कुर्यान्निवेशनस्य पलिकुञ्चिकेऽस्मिन्॥२३॥

āvasatha *m* - жилище, место жительства;

palikuñcika *m, n buddh.* - хижина;

सो चा धनी तं पुरुषं निरीक्षेद्वाक्ष ओलोकनकेहि नित्यम्।

हीनाधिमुक्तो अयु मह्य पुत्रः संकारधानं शुचिकं करोति॥२४॥

olokanaka *buddh.n* - окно;

स ओतरित्वा पिटकं गृहीत्वा मलिनानि वस्त्राणि च प्रावरित्वा।

उपसंक्रमेत्तस्य नरस्य अन्तिके अवभर्त्सयन्तो न करोथ कर्म॥२५॥

ava√bharts (p.pr. avabhartsayant) - удерживать угрозой, бранить;

द्विगुणं च ते वेतनकं ददामि द्विगुणं च भूयस्तथ पादम्रक्षणम्।

सलोणभक्तं च ददामि तुभ्य शाकं च शाटिं च पुनर्ददामि॥२६॥

mrakṣaṇa *n* - мазь, притирание, масло;
loṇa = lavaṇa;
śāka *n* - зелень, овощи;

एवं च तं भर्त्सिय तस्मि काले संश्लेषयेत्तं पुनरेव पण्डितः।

सुष्ठुं खलू कर्म करोषि अत्र पुत्रोऽसि व्यक्तं मम नात्र संशयः॥२७॥

√bharts X U. - грозить, бранить, оскорблять;
saṃ√śleṣaya *caus.* - соединять, связывать, идти на контакт;
suṣṭhu *buddh.* - хороший, превосходный;
vyaktam *adv.* - ясно, очевидно, несомненно;

स स्तोकस्तोकं च गृहं प्रवेशयेत्कर्मं च कारापयि तं मनुष्यम्।

विंशच्च वर्षाणि सुपूरितानि क्रमेण विश्रम्भयि तं नरं सः॥२८॥

stoka - маленький, короткий; *Acc. adv.;*
pūrita - p.p.caus. *om* √par;
vi√śrambhaya *caus.* - смягчать, внушать доверие;

हिरण्यु सो मौक्तिकु स्फाटिकं च प्रतिशामयेत्तत्र निवेशनस्मिन्।

सर्वं च सो संगणनां करोति अर्थं च सर्वं अनुचिन्तयेत॥२९॥

mauktika *m* - жемчуг;
sphāṭika *n* - кристалл;
prati√śāmaya *buddh.* - запасать, хранить; откладывать, убирать; принимать, укрывать;
saṃgaṇanā *f buddh.* - собрание, скопление, встреча;
anu√cint X P. - думать, заботиться о к.-л., ч.-л.;

बहिर्धा सो तस्य निवेशनस्य कुटिकाय एको वसमानु बालः।

दरिद्रचिन्तामनुचिन्तयेत न मेऽस्ति एतादृश भोग केचित्॥३०॥

bahirdhā *adv.* - снаружи, вне ч.-л.;
kuṭikā *f* - хижина;

ज्ञात्वा च सो तस्य इमेवरूपमुदारसंज्ञाभिगतो मि पुत्रः।

स आनयित्वा सुहृज्ञातिसंघं निर्यातयिष्याम्यहु सर्वमर्थम्॥३१॥

राजान सो नैगमनागरांश्च समानयित्वा बहुवाणिजांश्च।

उवाच एवं परिषाय मध्ये पुत्रो ममायं चिर विप्रनष्टकः॥३२॥

pariṣā *f* - собрание;

पञ्चाश वर्षाणि सुपूर्णकानि अन्ये चऽतो विंशतिये मि दृष्टः।

अमुकातु नगरातु ममैष नष्टो अहं च मार्गन्त इहैवमागतः॥३३॥

सर्वस्य द्रव्यस्य अयं प्रभुर्मे एतस्य निर्यातयि सर्वशेषतः।

करोतु कार्यं च पितुर्धनेन सर्वं कुटुम्बं च ददामि एतत्॥३४॥

kuṭumba *n* - дом, хозяйство; семья;

आश्चर्यप्राप्तश्च भवेन्नरोऽसौ दरिद्रभावं पुरिमं स्मरित्वा।

हीनाधिमुक्तिं च पितुश्च तान् गुणाँल्लब्ध्वा कुटुम्बं सुखितोऽस्मि अद्य॥३५॥

तथैव चास्माक विनायकेन हीनाधिमुक्तित्व विजानियान।

न श्रावितं बुद्ध भविष्यथेति यूयं किल श्रावक मह्य पुत्राः॥३६॥

vināyaka *buddh. m - эпитет Будды,* Вождь, Ведущий;

अस्मांश्च अध्येषति लोकनाथो ये प्रस्थिता उत्तममग्रबोधिम्।

तेषां वदे काश्यप मार्ग नुत्तरं यं मार्ग भावित्व भवेयु बुद्धाः॥३७॥

adhīṣ (adhi√iṣ, adhyeṣati I P.) *buddh.* - просить, давать указания;

वयं च तेषां सुगतेन प्रेषिता बहुबोधिसत्त्वान महाबलानाम्।

अनुत्तरं मार्ग प्रदर्शयाम दृष्टान्तहेतूनयुतान कोटिभिः॥३८॥

pra√darśaya *caus.*- показывать, объяснять, учить;

dṛṣṭānta (dṛṣṭa-anta) - служащий примером; *m* пример, образец;

श्रुत्वा च अस्माकु जिनस्य पुत्रा बोधाय भावेन्ति सुमार्गमग्र्यम्।

ते व्याक्रियन्ते च क्षणस्मि तस्मिन्भविष्यथा बुद्ध इमस्मि लोके॥३९॥

√bhāvaya (caus. *om* √bhū) - создавать, производить, оживлять, проявлять, осуществлять, практиковать; показывать;

vy-ā√kar VIII P. *buddh.* - объяснять, предсказывать;

एतादृशं कर्म करोम तायिनः संरक्षमाणा इम धर्मकोशम्।

प्रकाशयन्तश्च जिनात्मजानां वैश्वासिकस्तस्य यथा नरः सः॥४०॥

tāyin *buddh.* - святой, защитник;

vaiśvāsika - надежный, заслуживающий доверия;

दरिद्रचिन्ताश्च विचिन्तयाम विश्राणयन्तो इमु बुद्धकोशम्।

न चैव प्रार्थेम जिनस्य ज्ञानं जिनस्य ज्ञानं च प्रकाशयामः॥४१॥

vi√śrāṇaya *caus.* - отдавать, раздавать, дарить;

प्रत्यात्मिकीं निर्वृति कल्पयाम एतावता ज्ञानमिदं न भूयः।

नास्माक हर्षोऽपि कदाचि भोति क्षेत्रेषु बुद्धान श्रुणित्व व्यूहान्॥४२॥

pratyātmika *buddh.*- собственный, личный, индивидуальный;

√kalpaya *caus.* - приводить в порядок, распределять, размещать; считать, думать, провозглашать;

शान्ताः किला सर्विमि धर्म नास्रवा निरोधउत्पादविवर्जिताश्च।

न चात्र कश्चिद्भवतीह धर्मो एवं तु चिन्तेत्व न भोति श्रद्धा॥४३॥

srava - текучий, струящийся;

सुनिःस्पृहा स्मा वय दीर्घरात्रं बौद्धस्य ज्ञानस्य अनुत्तरस्य।

प्रणिधानमस्माक न जातु तत्र इयं परा निष्ठ जिनेन उक्ता॥४४॥

praṇidhāna *n buddh.* - сосроедоточение ума, страстное желание, обет;

niṣṭhā *f* - состояние, стойкость, преданность; несомненное знание; наивысшая точка ч.-л., совершенство, завершение;

निर्वाणपर्यन्ति समुच्छ्रयेऽस्मिन्परिभाविता शून्यत दीर्घरात्रम्।

परिमुक्त त्रैधातुकदुःखपीडिताः कृतं च अस्माभि जिनस्य शासनम्॥४५॥

paryanta *m* - граница, край, предел; (◦-) ограниченный, оканчивающийся ч.-л.;
samucchraya *m buddh.* - большое количество, масса; тело, телесное существование;
paribhāvita *buddh.* - проникнутый, пропитанный, насыщенный;

यं हि प्रकाशेम जिनात्मजानां ये प्रस्थिता भोन्ति इहाग्रबोधौ।

तेषां च यत्किंचि वदाम धर्मं स्पृह तत्र अस्माक न जातु भोति॥४६॥

तं चास्म लोकाचरियः स्वयंभूरुपेक्षते कालमवेक्षमाणः।

न भाषते भूतपदार्थसंधिं अधिमुक्तिमस्माकु गवेषमाणः॥४७॥

padārtha (pada-artha) *m* - значение слова, объект, вещь; категория;
saṃdhi *f buddh.* - соединение, связь, привязанность; складка; стремление, намерение; скрытое или тайное значение (=saṅdhā *buddh.*);

उपायकौशल्य यथैव तस्य महाधनस्य पुरुषस्य काले।

हीनाधिमुक्तं सततं दमेति दमियान चास्मै प्रददाति वित्तम्॥४८॥

√damaya *caus.* - подчинять, покорять, брать вверх над ч.-л., к.-л.;

सुदुष्करं कुर्वति लोकनाथो उपायकौशल्य प्रकाशयन्तः।

हीनाधिमुक्तान् दमयन्तु पुत्रान्दमेत्व च ज्ञानमिदं ददाति॥४९॥

आश्चर्यप्राप्ताः सहसा स्म अद्य यथा दरिद्रो लभियान वित्तम्।

फलं च प्राप्तं इह बुद्धशासने प्रथमं विशिष्टं च अनास्रवं च॥५०॥

āsrava *buddh.* - грех, порок; зло, несчастье;
anāsrava *buddh.* - чистый, безгрешный;

यच्छीलमस्माभि च दीर्घरात्रं संरक्षितं लोकविदुस्य शासने।

अस्माभि लब्धं फलमद्य तस्य शीलस्य पूर्वं चरितस्य नाथ॥५१॥

dīrgharātram (dīrgha-rātram) *adv. buddh.* - долгое время;

यद्ब्रह्मचर्यं परमं विशुद्धं निषेवितं शासनि नायकस्य।

तस्यो विशिष्टं फलमद्य लब्धं शान्तं उदारं च अनास्रवं च॥५२॥

ni√ṣev (ni√sev) I Ā. - обитать, прислуживать; пребывать, почитать;

अद्यो वयं श्रावकभूत नाथ संश्रावयिष्यामथ चाग्रबोधिम्।

बोधीय शब्दं च प्रकाशयामस्तेनो वयं श्रावक भीष्मकल्पाः॥५३॥

bhīṣma *buddh.* - ужасный, могучий, неодолимый;
kalpa - способный, даровитый, возможный, подобный; *m* правило, обычай, эпоха, мировой период;

अर्हन्तभूता वयमद्य नाथ अर्हामहे पूज सदेवकातः।

लोकात्समारातु सब्रह्मकातः सर्वेष सत्त्वान च अन्तिकातः॥५४॥

को नाम शक्तः प्रतिकर्तु तुभ्यमुद्युक्तरूपो बहुकल्पकोट्यः।

सुदुष्कराणीदृशका करोषि सुदुष्करान्यानिह मर्त्यलोके॥५५॥

prati√kar VIII U. - отплатить к.-л. (за зло или добро);
ud√yuj VII U. - усердно работать, прилагать усилия;

हस्तेहि पादेहि शिरेण चापि प्रतिप्रियं दुष्करकं हि कर्तुम्।

शिरेण अंसेन च यो धरेत परिपूर्णकल्पान् यथ गङ्गवालिकाः॥५६॥

pratipriya *n buddh.* - соответствующее благодеяние; согласование;
vālikā *f buddh.* - песок, песчинки;

खाद्यं ददेद्भोजनवस्त्रपानं शयनासनं चो विमलोत्तरच्छदम्।

विहार कारापयि चन्दनामयान्संस्तीर्य चो दूष्ययुगेहि दद्यात्॥५७॥

chada *m* - покров, покрывало; крыло птицы, лист;
vihāra *m buddh.* - монастырь;
dūṣya *n* - хлопчатобумажная ткань, одежда;
saṃs√tar V U., IX U., I P. - простираться, расширяться, покрывать;

गिलानभैषज्य बहुप्रकारं पूजार्थ दद्यात् सुगतस्य नित्यम्।

ददेय कल्पान्यथ गङ्गवालिका नैवं कदाचित् प्रतिकर्तु शक्यम्॥५८॥

gilāna *buddh.* (skr. glāna) - истощенный, слабый, больной;
bhaiṣajya *n* - лекарство, лечебное средство;
prakāra *m* - сорт, вид; способ, манера;

महात्मधर्मो अतुलानुभावो महर्द्धिकः क्षान्तिबले प्रतिष्ठितः।

बुद्धो महाराज अनास्रवो जिनो सहन्ति बाला न इमीदृशानि॥५९॥

maharddhika *buddh.* - обладающий сверхъественственной магической силой;
kṣānti *f* - терпение, терпимость;

अनुवर्तमानस्तथ नित्यकालं निमित्तचारीण ब्रवीति धर्मम्।

धर्मेश्वरो ईश्वरु सर्वलोके महेश्वरो लोकविनायकेन्द्रः॥६०॥

nimitta *n* - цель, причина; знак, предзнаменование; *buddh.* - личная особенность, характерная черта;

प्रतिपत्ति दर्शेति बहुप्रकारं सत्त्वान स्थानानि प्रजानमानः।

नानाधिमुक्तिं च विदित्व तेषां हेतूसहस्रेहि ब्रवीति धर्मम्॥६१॥

pratipatti *f buddh.* - поведение (особенно добродетельное поведение), практика;
pra√jñā IX P. - знать, понимать;

तथागतश्चर्य प्रजानमानः सर्वेष सत्त्वान थ पुद्गलानाम्।

बहुप्रकारं हि ब्रवीति धर्मं निदर्शयन्तो इममग्रबोधिम्॥६२॥

pudgala *m* - тело; душа, личность; индивидуальность;
ni√darśaya *caus.* - показывать, учить, наставлять; провозглашать;

इत्यार्यसद्धर्मपुण्डरीके धर्मपर्याये अधिमुक्तिपरिवर्तो नाम चतुर्थः॥

dharma-paryāya *m* - религиозный трактат, способ (изложения) учения; фрагмент текста;